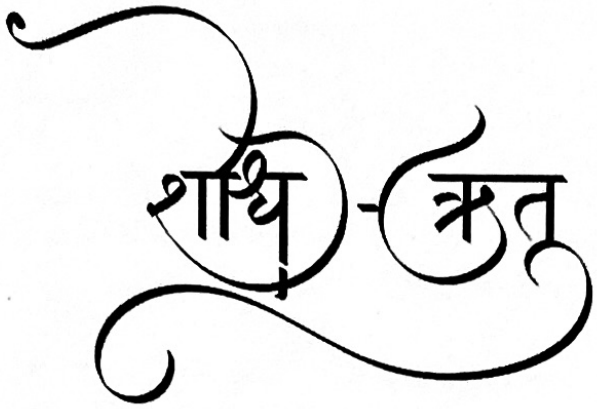

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

Open Transparent PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-32 **VOLUME-7** ISSN-2454-6283 **April-June–2023**

IMPACT FACTOR - **(IIJIF-8.712)** **(COSMOS– 2019-4.649)**

Scopus Impact factor (1.25) & Indexed,

Thomson Reuters Edwin Impact Factor-2.88

DOI Number - **https://doie.org/10.0517/shodritu.2023809664**

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

9405384672

तकनीकी सम्पादक

अनिल जाधव, मुंबई

पत्राचार हेतु पता–

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड–431605

14.व्यंग्य : एक सैद्धांतिक विवेचन

–श्री.अनिल शिवाजी झोळ
सहा. प्राध्यापक,
हिंदी विभाग, वाघीरे महाविद्यालय, सासवड, तह. पुरंदर, जि.पुणे

प्रस्तावना :व्यंग्य आरंभ से बोलचाल की भाषा में तो रहा लेकिन साहित्य में इसका प्रवेश बहुत बाद में हुआ। साहित्य सबको साथ लेकर चलने की मंशा रखता है। लेकिन व्यंग्य सबको साथ लेकर नहीं चलता, वह समाज में व्याप्त विरोधाभासों का मज़ाक उडाता है। पाखंड पर चोट करता है। छल–प्रपंच और ऊपर से न दिखाई देने वाली विसंगतियों का पर्दाफाश करता है। जब साहित्यकार समाज में व्याप्त विसंगतियों, विद्रूपों, पाखंड को सामाजिक दबाओं या राजनैतिक कारणों से, या कभी–कभी अन्यायपूर्ण व्यवस्था का खुद भी जीविका उपार्जन के लिए एक अंग होने की वजह से, प्रत्यक्षतः नहीं रख पाता तो वह उन्हें व्यंग्य के माध्यम से साहित्य को समर्पित करता है।

व्यंग्य का अर्थ एवं स्वरूप :हिंदी भाषा और साहित्य में प्रचलित 'व्यंग्य' शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है। जो 'वि' उपसर्ग एवं 'ण्यत्' प्रत्यय से 'अञ्ज' योग से बनता है। संस्कृत साहित्य में व्यंग्य का प्रयोग आधुनिक 'व्यंग्य' के अर्थ में न होकर संपूर्ण काव्यशास्त्रीय अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में व्यंग्यार्थ (व्यंजित लेने वाला अर्थ) के रुप में प्राप्त होता है। वर्तमान हिंदी में प्रचलित 'व्यंग्य' को अंग्रेजी के 'सटायर' (SATIRE) का पर्याय माना जाता है। 'सटायर' शब्द लैटिन शब्द 'SATURA' से बना है जिसका अर्थ गड़बड़झाला है। सैटूरा के कम से कम दो रुप विकसित हुए थे जिसका एक रुप बाद में प्रचलित रहा और यह रुप पद्य–निबंध के समान था। पुरातन काल में सैटूरा शब्द परनिंदा के अर्थ में प्रयुक्त होता था और ऐतिहासिक अर्थ की छाया वर्तमान सटायर शब्द पर भी पड़ी है। अब सटायर में केवल परनिंदा नहीं होती कुछ बातों में हेरफेर होता है। अनिल राकेशी ने सटायर शब्द के अर्थ को इस प्रकार बताया है, "सटायर शब्द लैटिन शब्द सैटूरा से निकला है जिसका अर्थ था भरपूर और बाद में इसका अर्थ हो गया विभिन्न चीजों का मिश्रण या घालमेल।"1

व्यंग्य हमारे यथार्थ की अभिव्यक्ति है। व्यक्ति तथा समाज की कमजोरियों, दुर्बलताओं, विषमताओं, कथनी–करनी के बीच के अंतर को व्यंग्य ही सही दिशा में हमारे सामने लाता है। कभी–कभी वह आक्रामक हो जाता है लेकिन इसमें भी नैतिक और सामाजिक हितों का उद्देश्य निहित होता है।

व्यंग्य की परिभाषा : भारतीय आलोचकों की परिभाषाएं : भारतीय विद्वानों ने 'व्यंग्य' को ध्वनि वक्रोक्ति में समाहित किया है। आधुनिक विद्वानों ने व्यंग्य की परिभाषा इस प्रकार दी है–•आचार्य **हजारी प्रसाद द्विवेदी** ने व्यंग्य को इस रुप में परिभाषित किया है, "व्यंग्य वह विधा है जहाँ कहने वाला अधरोष्ठ में हँस रहा हो और सुनाने वाला तिलमिला उठे और फिर भी कहने वाले को जवाब देना अपने आप को और भी उपहासास्पद बना लेना हो जाता है।"3 •**हरिशंकर परसाई** का मानना है कि, "व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार कराता है, जीवन की आलोचना करता है। विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफाश करता है। यह नारा नहीं है। मैं यह कह रहा हूँ जीवन के प्रति व्यंग्यकार की उतनी ही निष्ठा होती है जितनी किसी गंभीर रचनाकार की, बल्कि जादा ही। वह जीवन कर प्रति दायित्वों का अनुभव करता है। जिंदगी बहुत जटिल चीज है। इसमें खालिस हँसना या खालिस रोना जैसी चीज नहीं होती, बहुत सी हास्य रचनाओं में करुणा की धारा है। अच्छा व्यंग्य सहानुभूति का सबसे उत्कृष्ट रूप होता है।"5 हरिशंकर परसाई व्यंग्य को जीवन की आलोचना करने वाला बताते हुए सामाजिक दायित्यों का अनुभव कराने वाला बताते है वे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा डॉ. रामकुमार वर्मा की तरह व्यंग्य में हास्य का होना भी अनिवार्य नहीं मानते हैं। •**डॉ. शेरजंग गर्ग** ने व्यंग्य की विभिन्न परिभाषाओं पर विचार करते हुए व्यंग्य की समेकित परिभाषा दी है। जिसमें समाज या व्यक्ति की दुर्बलताओं, विषमताओं आदि को कभी वक्र तो कभी सपाट शब्दों में व्यक्त किया है, "व्यंग्य एक ऐसी साहित्यिक अभिव्यक्ति या रचना है, जिसमें व्यक्ति तथा समाज की कमजोरियों, दुर्बलताओं, करनी एवं कथनी के अंतरो की समीक्षा अथवा निंदा, भाषा की टेढ़ी भंगिमा देकर अथवा कभी–कभी पूर्णतः सपाट शब्दों में प्रहार करते हुए की जाती है। वह पूर्णतः अगंभीर होते हुए गभीर हो सकती है, निर्दय लगते हुए तटस्थ लग सकती है, माखौल लगती हुई बौद्धिक हो सकती है, अतिशयोक्ति एवं अतिरंजना का आभास देने के बावजूद पूर्णतः सत्य हो सकती है। व्यंग्य में आक्रमण की उपस्थिति अनिवार्य है ।"6 उपर्युक्त परिभाषा में व्यंग्य को एक साहित्यिक अभिव्यक्ति कहा गया है। जिसमें आक्रोश एवं आक्रामकता को अनिवार्य तत्व मानते हुए उसे हास्य से अलग करने का प्रयास किया गया है। •**नरेंद्र कोहली** के अनुसार, "कुछ अनुचित अथवा गलत देखकर जो आक्रोश जगता है, वह यदि काम में परिणत हो सकता है, तो अपनी असहायता में वक्र होकर वह अपनी तथा दूसरों की पीड़ा पर हँसने लगता है तब वह विकट व्यंग्य होता है, पाठक के मन को चुभलाता सहलाता नहीं, कोड़े लगाता है। अतः वह सार्थक और सशक्त व्यंग्य कहलाता है ।"8 नरेंद्र कोहली भी मानते हैं कि जब सामाजिक बुराईयों को देखकर मन में आक्रोश जगता है तब वाणी द्वारा वह व्यंग्य कहलाता है। •**डॉ. बालेंदु शेखर तिवारी** के अनुसार, "व्यंग्य एक विशिष्ट समानधर्मी, प्रेरणाविधि अथवा एक विशिष्ट मानसिक भंगिमा है, जिसका उद्भव अंतर्विरोधों के कारण होता है और जिसमें व्यक्ति अथवा व्यवस्था विशेष के दौर्बल्य की अपेक्षात्मक अभिव्यक्ति द्वारा परिवर्तन का अभीष्ट पूर्ण होता है ।"9 अर्थात् समाज में अनुचित कार्यों को होता देख मन में उसके प्रति विरोध उत्पन्न होता है और व्यंग्य के माध्यम से ही समाज में हो रहे